Today's Poem – 30.05.2014

तुम्हें कर्मातीत बनकर जाना है

इसलिए अपनी जांच कर कमियां निकालते रहना है

बुद्धि में सिवाए बाप और घर के कोई वस्तु याद न आये

इन आँखों से देखने वाली कोई भी चीज़ सामने न आये

एक लवली बाप को याद है करना

वेल्यूबुल हीरा है बनना

काँटों को फूल बनाने की सेवा में लग जाना है

ट्रस्टी होकर रहना है

सर्व सम्बन्ध एक बाप से जोड़ना

साक्षी दृष्टा होकर रहना

मेरा बाबा

ॐ शान्ति !!!